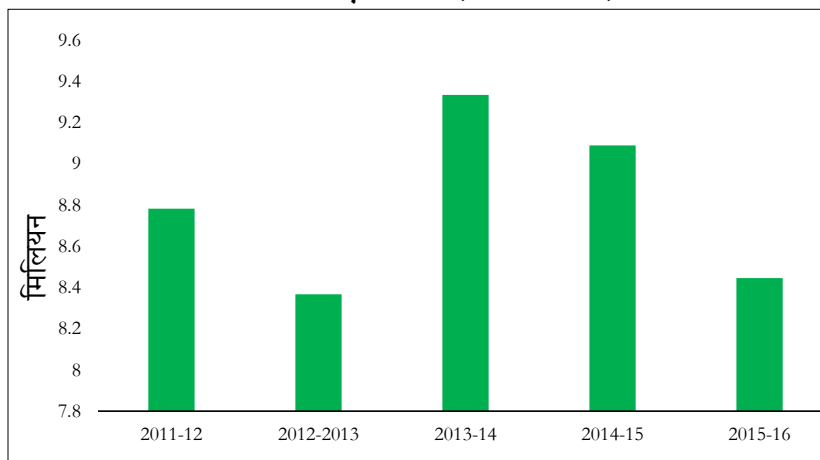


भारत : आठ रोचक तथ्य

● संचरणशील भारतीय

रेलयात्री प्रवाह के आंकड़ों पर आधारित नए अनुपात दर्शा रहे हैं कि लगभग 9 मिलियन व्यक्ति रोजीरोटी कमाने के लिए प्रवास कर रहे हैं। ये आंकड़े 2011 की जनसंख्या गणना के अनुमान से लगभग दुगुने हैं।

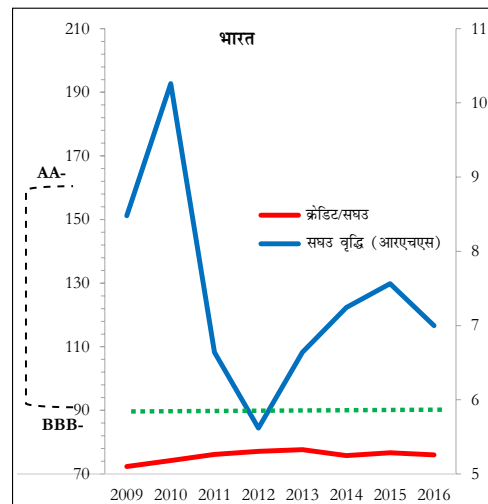
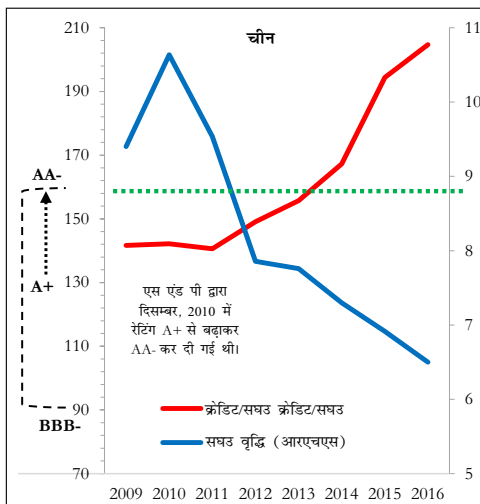
वार्षिक नए प्रवासी (मिलियन में)



● अवगम (क्रमिकता निर्धारण) के पूर्वाग्रह

दिसंबर 2010 में चीन की साख योग्यता का A+ से AA- पर उन्नयन कर दिया गया है, जबकि भारत की क्रमिकता BBB- पर ही टिकी हुई है। वर्ष 2009-15 की अवधि में चीन का साख जीडीपी अनुपात 142 प्रतिशत बढ़कर 205 प्रतिशत हो गया है और इसकी संवृद्धि दर में गिरावट आई है। भारत के इन्हीं सूचकों से तुलना निश्च ही चौंकाने वाली है।

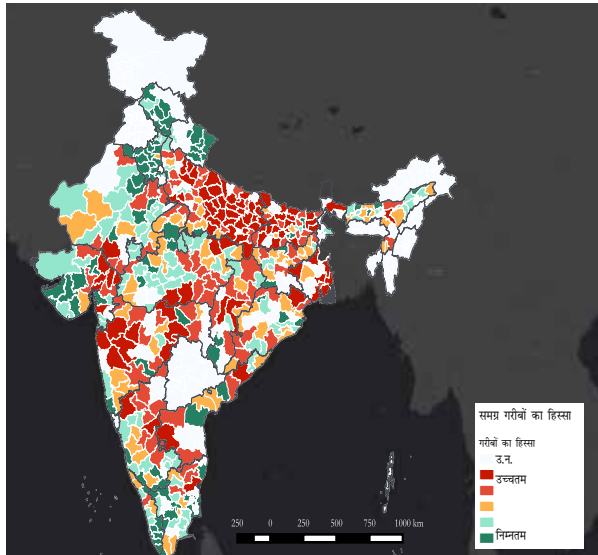
योग्यता निर्धारण के त्रुटिपूर्णमानक : साखयोग्यता निर्धारक-चीन और भारत



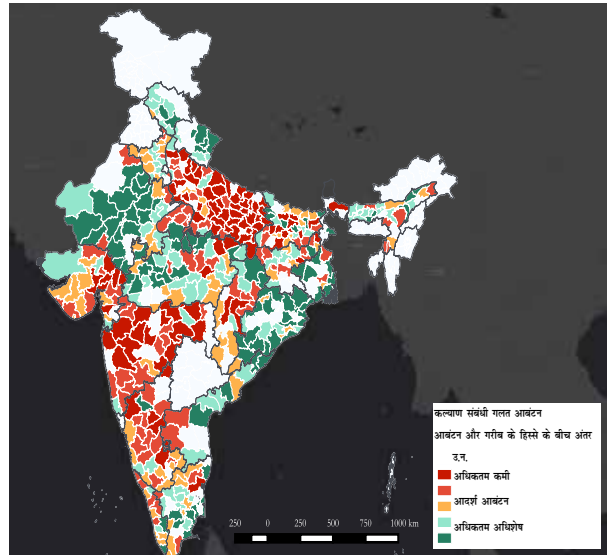
● सामाजिक कार्यक्रमों की त्रुटिपूर्ण लक्षिता : नए प्रमाण

भारत में क्षेम संवर्धन कार्यक्रमों पर व्यय की एक बड़ी समस्या उस धन के अप आबंटन से जुड़ी है। हमारे निम्न रेखाचित्र दर्शा रहे हैं कि जिन जनपदों में गरीबजन अनुपात सर्वाधिक है (लाल रंग, बायां चित्र)। वही आबंटित धन के अभाव को सबसे अधिक झेल रहे हैं (लाल रंग दाहिना चित्र)। जिन जनपदों में देश के गरीबों की 40 प्रतिशत संख्या बसी है, उन तक गरीब जन क्षेम कार्यक्रमों पर खर्च की गई राशियों का 29 प्रतिशत ही पहुँच पा रहा है।

जनपदानुसार गरीबों का अंश



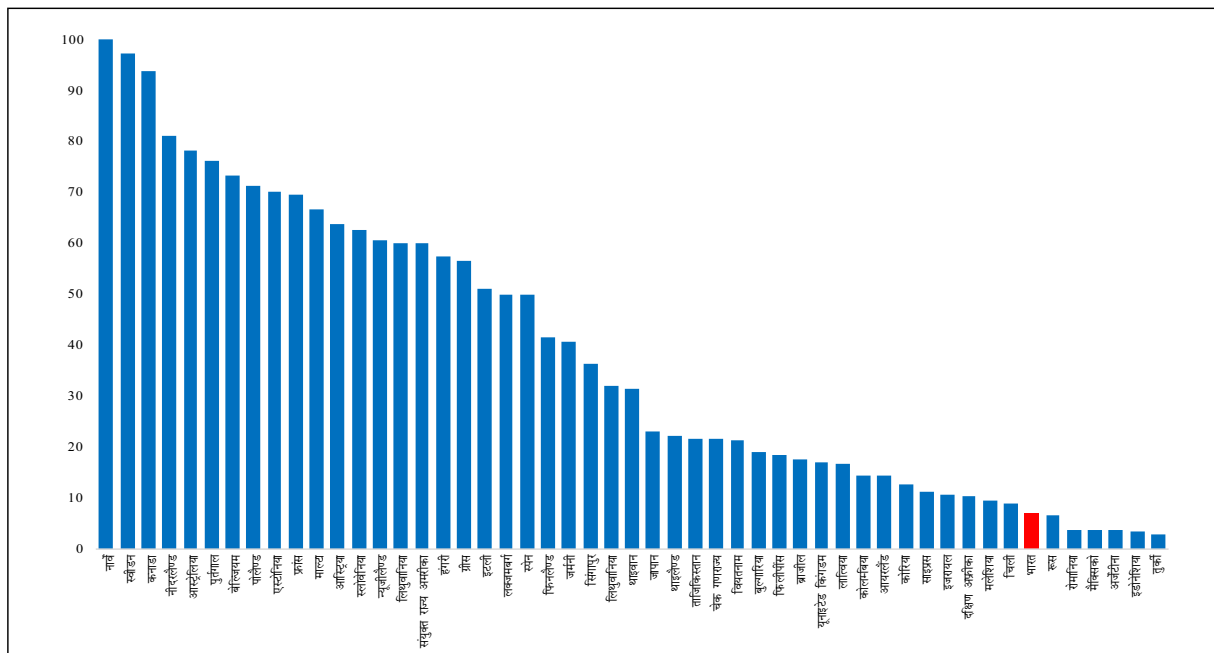
जनपदानुसार गरीबों को आबंटन में रही कमी



● राजनीतिक लोकतंत्र तो है पर राजकोषीय लोकतंत्र (कहां है)?

भारत में प्रत्येक 100 मतदाताओं में से केवल 7 व्यक्ति करदाता है। यह हमें अपने G-20 समूह के सहयोगी देशों के 18 लोकतंत्रों में 13वें स्थान पर पहुँचा देता है।

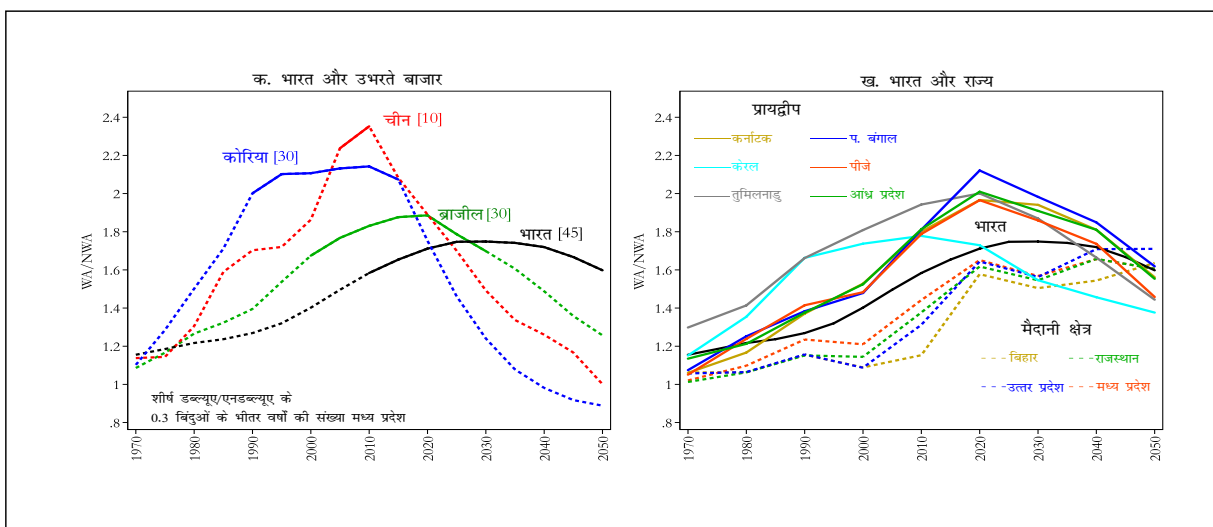
करदाता, प्रतिहजार मतदाता



● भारत का विशिष्ट जनांकीय लाभांश

भारत की जनसंख्या में कार्यशील आयु के वर्ग का गैर कार्यशील वर्ग के साथ अनुपात अन्य देशों के बाद अपने शिखर स्तर को प्राप्त करेगा और यह अधिक समय तक उक्त शिखर पर बना भी रहेगा। इस जनांकीय उत्प्रेरणा के कारण संवृद्धि में उत्कर्ष का शिखर शीघ्र ही आने वाला है। हां, प्रायः द्वीपीय राज्यों में यह शिखर पहले आ जाएगा, और आन्तरिक राज्यों में इसके काफी बाद में आने की आशा है।

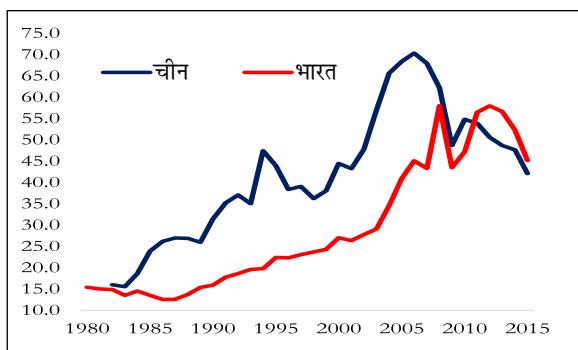
भारतीय राज्यों में तथा अन्य उदीप्यमान अर्थव्यवस्थाओं में जनांकीय लाभांश



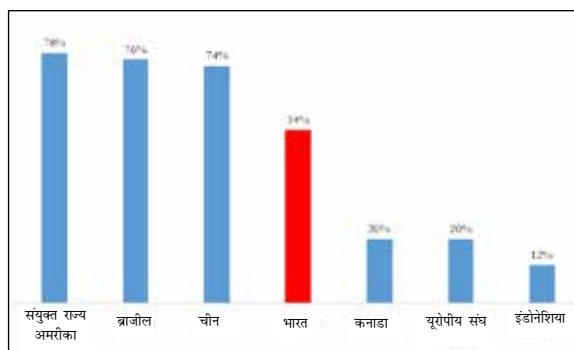
● भारत चीन की अपेक्षा अधिक व्यापार करता है और इसका आन्तरिक व्यापार भी अधिक है

यदि भारत के व्यापार के प्रति खुलेपन की बात करें तो 2011 में इसका वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार का जीडीपी से अनुपात चीन से कहीं आगे निकल चुका था (चीन विश्व में व्यापार को संवृद्धि इंजन या मुख्य प्रेरक बनाने वाला देश माना जाता है)। भारत का आन्तरिक व्यापार भी अन्य बड़े देशों जैसा ही है। यह परिदृश्य उस रचना से बहुत ही भिन्न है, जिसमें भारत को तरह-तरह की व्यापार बाधाओं से ग्रस्त घोषित कर दिया जाता है।

व्यापार (जीडीपी के प्रतिशत के रूप में)



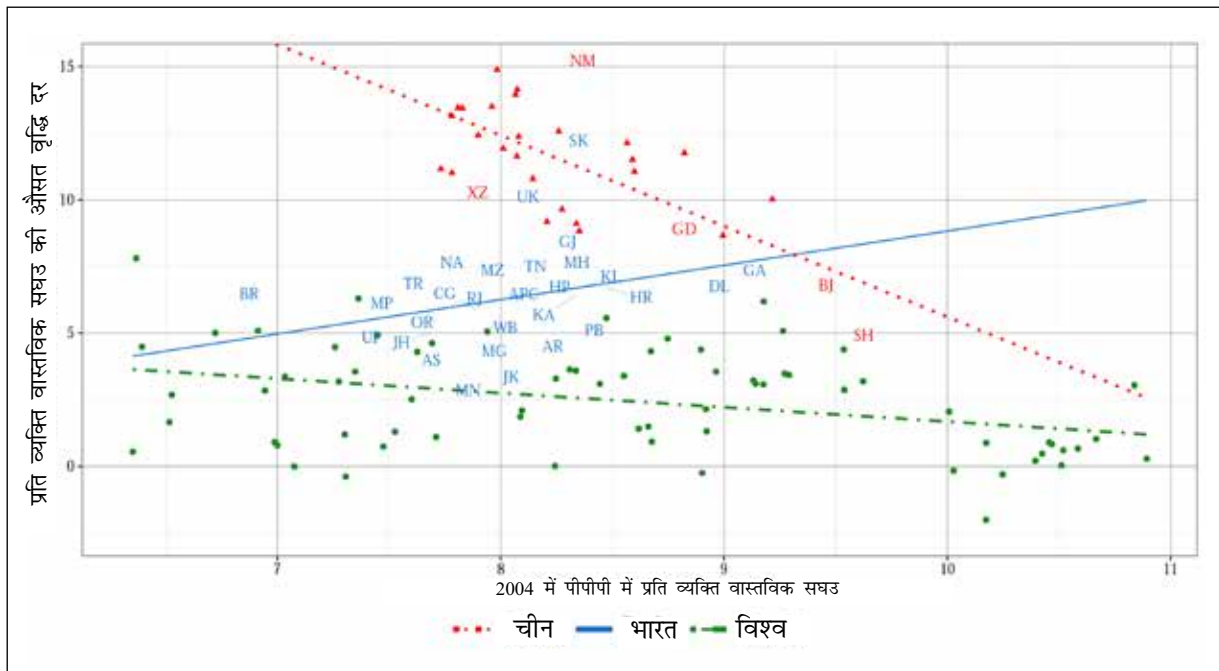
आंतरिक व्यापार (जीडीपी प्रतिशत के रूप में)



● भारत में अपसृति : प्रसार

पिछले दशक (2004-14) में भी भारत में आय के आबंटन की क्षेत्रीय विषमताओं में प्रसार होता रहा है। यह प्रवृति शेष विश्व और चीन के विपरीत ही है। आश्चर्य की बात तो यह है कि अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के विपरीत भारतीय राज्यों की सीमाएं तो बहुत ही छिद्रपूर्ण हैं, फिर भी अभिसृतिकारी शक्तियां दुर्लभ्य ही प्रतीत हुई हैं।

प्रतिव्यक्ति जीडीपी में निःशर्त अभिसृति



● अविदौहित संपत्ति कर सामर्थ्य

उपग्रहों से प्राप्त आंकड़े दर्शा रहे हैं कि बेंगलुरु और जयपुर अपने संभावी संपत्तिकर सामर्थ्य के मात्र 5 प्रतिशत से 20 प्रतिशत की ही उगाही कर पा रहे हैं।

शहरी निर्मित क्षेत्र का प्रसार : बेंगलुरु

